SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

fo|ky;h f'k{kk ,o mPp f'k{kk dh leL;k,] >kj[k.M jkT; d lUnHk e

j tuk çlg] शोधार्थी, शिक्षा विभाग
आर. के. डी. एफ. यूनिवर्सिटी, रांची, झारखंड़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author
j tuk çlg] शोधार्थी, शिक्षा विभाग
आर. के. डी. एफ. यूनिवर्सिटी, रांची, झारखंड़, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 22/02/2023
Revised on : -----
Accepted on : 01/03/2023
Plagiarism : 00% on 22/02/2023

Plagiarism Checker X - Report
Originality Assessment
Overall Similarity: **0%**
Date: Feb 22, 2023
Statistics: 5 words Plagiarized / 3392 Total words
Remarks: No similarity found, your document looks healthy.

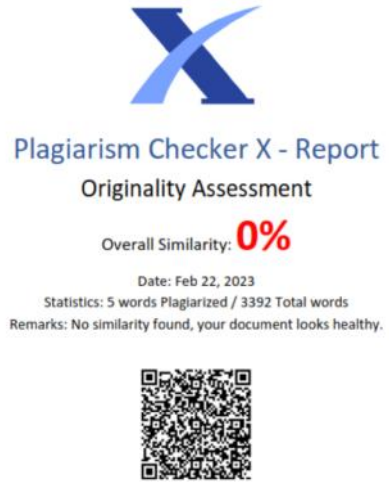

'kks/k lkj

शिक्षा प्राप्त करने का उद्देश्य केवल जीवकोपार्जन करना ही नहीं वरन् शिक्षा मोक्ष प्राप्ति का एक साधन माना गया था। शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य को ज्ञान प्राप्त होता है, ज्ञान से ही उसके मस्तिष्क का विकास होता है, उसके व्यक्तित्व का विकास होता है। उसे आध्यात्मिक और पारलौकिक विषयों की अनुभूति होने लगती है, तभी ज्ञान को तीसरा नेत्र कहा गया है। ज्ञान अथवा विद्या माता की तरह रक्षा करती है, पिता की तरह सदमार्ग का रास्ता दिखाती है।

e[; 'kCn

f'k{kk] rduhd] 'kfä'kkyh] thodkiktu] efLr"d] vuHkfr-

çLrkouk

शिक्षा ज्ञान उचित आचरण, तकनीकी दक्षता, विद्या आदि को प्राप्त करने की प्रक्रिया को कहते हैं। शिक्षा शब्द संस्कृत भाषा की शिक्ष धातु में और प्रत्यय अ लगाने से बना है। शिक्षा का अर्थ है सीखना और सिखाना। शिक्षा शब्द का अर्थ हुआ – ''सीखने सिखाने की क्रिया''।

f'k{kk dh ifjHkk"kk

पेस्टोलॉजी के अनुसारः "शिक्षा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का स्वाभाविक सामंजस्य पूर्ण और प्रगतिशील विकास है।"

जेम्स के अनुसारः "शिक्षा कार्य संबंधित अर्जित आदतों का संगठन है, जो व्यक्ति को उसके भौतिक और सामाजिक वातावरण में उचित स्थान देती है।"

स्वामी विवेकानंद के अनुसारः "शिक्षा मानव में सन्निहित पूर्णता का विकास है।"

ifjp;

प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् जो शिक्षा प्राप्त की जाती है उसे माध्यमिक शिक्षा करते हैं इसे दो भागों में बांटा जा सकता है:

- fuEu ekè;fed Lrj% निम्न माध्यमिक स्तर विद्यालय शिक्षा एवं उच्च शिक्षा के बीच की महत्वपूर्ण कड़ी है, इसमें कक्षा 6 से 8 तक के स्तर की कक्षाएं आती है। इसी उम्र में विद्यार्थी सुचारू रूप से सीखना प्रारंभ करता है, इसी स्तर से विद्यार्थी के भविष्य की नींव का शुभारंभ होता है और जीवन को प्रभावित करता है।
- mPp ekè;fed Lrj% उच्च माध्यमिक स्तर भी अति महत्वपूर्ण कड़ी है। इसमें विद्यार्थी अपने भविष्य की ओर अग्रसर होता है। कक्षा 9 से 12 तक की कक्षाएं इसके अंतर्गत आती है। विद्यार्थी अपने भविष्य के प्रति गंभीर होना प्रारंभ करते हैं तथा अपनी रुचि और बेहतर भविष्य की संभावनाओं के साथ अपने विषयों का चयन करते हैं तथा बोर्ड परीक्षा के लिए स्वयं को तैयार करते हैं।

fLFkfr

यह शिक्षा की सबसे अधिक महत्वपूर्ण तथा शिक्षा जगत की सबसे कमजोर कड़ी है। महत्वपूर्ण इसलिए क्योंकि इस स्तर पर विश्व में सबसे अधिक लोग इसी शिक्षा को प्राप्त करते हैं और इस शिक्षा को प्राप्त करने के बाद या तो किसी व्यवसाय की छाया तकनीकी शिक्षा में प्रवेश कर प्रवेश पाते हैं या शिक्षा को छोड़ देते हैं और किसी अन्य कार्य में लग जाते हैं। कमजोर कड़ी इसलिए कही जाती है, क्योंकि यह प्राथमिक शिक्षा और उच्च शिक्षा के बीच की कड़ी है जिसमें कई कमियां है।

इसके संबंध में यह भी कहा गया है कि माध्यमिक शिक्षा हमारी शिक्षा जगत की सबसे कमजोर कड़ी है। यह परिणाम में अत्यधिक है और गुणात्मक स्तर पर दोषपूर्ण है।

ekè;fed f'k{kk vk;ksx% माध्यमिक शिक्षा व्यक्ति की किशोरावस्था के साथ संबंधित हैं। इस स्तर पर बच्चे के शारीरिक विकास पर ध्यान देना आवश्यक है।

ekè;fed f'k{kk vk;ksx dk vuqlkj% प्राथमिक शिक्षा के पश्चात् और विश्वविद्यालय की शिक्षा के आरंभ होने तक के समूचे शिक्षा काल को माध्यमिक शिक्षा कहा जाता है। यह शिक्षा 11 से 17 वर्ष के बच्चों को दी जाती है। प्रारंभिक माध्यमिक स्कूलों में पढ़ाने वाले कई अध्यापक केवल माध्यमिक शिक्षा प्राप्त कर पाते हैं जिन पर प्राथमिक शिक्षा के स्तर के बनाने का उत्तर दायित्व है, इसलिए इसके गुणात्मक विकास पर ध्यान दिया जाना चाहिए। राष्ट्र की सांस्कृतिक एवं तकनीकी कुशलताओं पर भी माध्यमिक शिक्षा का प्रभाव पड़ता है। यह नवयुवकों को सामाजिक निर्माण तथा राष्ट्र की आर्थिक उन्नति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए तैयार करती है। माध्यमिक शिक्षा ही विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा के लिए तैयार करती है।

f'k{kk dk mís';

शिक्षा ज्ञानार्जन व् आत्म उत्थान के लिए न रहकर व्यवसाय हो गई। इस स्थिति को बदला जाना चाहिए। प्राचीन काल की शिक्षा की भांति इसमें धार्मिक तथा नैतिक तत्वों को भी शामिल किया जाना चाहिए।

fo|ky;h; ekè;fed f'k{kk dk Lo:i ,oa lxBu

माध्यमिक शिक्षा का स्वरूप भारत वर्ष में एक समान नहीं है। विभिन्न राज्यों में इसका ढांचा विभिन्न बना हुआ है माध्यमिक शिक्षा आयोग में माध्यमिक शिक्षा आयोग ने एक सर्वेक्षण में शिक्षा और इसके विभिन्न भागों का विवरण इस प्रकार दिया है:

- fefMy Ldy çkFkfed% शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् इन स्कूल में छठी से आठवीं कक्षा तक शिक्षा दी जाती है।
- ekè;fed fo|ky;% इन स्कूलों में मिडिल तथा हाई स्कूलों की शिक्षा की व्यवस्था की जाती है।

- bVjehfM,V fo|ky;% इन विद्यालयों में मिडिल, हाई स्कूल तथा इण्टरकक्षाओं की व्यवस्था होती है। ऐसे इंटर कॉलेज अधिकतर झारखंड में पाए जाते हैं। इसमें हाईस्कूल के पश्चात् 2 वर्ष का पाठ्यक्रम होता है जो कि कक्षा 1 से 12 में विभिन्न पाठ्यक्रम के रूप में पढ़ाया जाता है।

>kj[kM e fo|ky;h f'k{kk dh çe[k leL;k,

Nk= f'k{kd dk vuikr lrfyr u gkuk% बहुत से स्कूल ऐसे हैं जहां जहां छात्रों के अनुपात में शिक्षक नहीं है। इस कारण से बच्चों की पढ़ाई प्रभावित होती है बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा नहीं मिल पाती और पढ़ाई के मामले में बाकी क्षेत्रों से पीछे रह जाते हैं।

- fo"k;okj f'k{kdk dk vHkko% झारखंड में बहुत से सरकारी स्कूल ऐसे हैं जहां पर विभिन्न विषयों के शिक्षक नहीं है, इसके कारण भी बच्चों की पढ़ाई प्रभावित होती है।
- iLrdky; dh n;uh; fLFkfr% विभिन्न जिलों के बहुतायत स्कूलों में माध्यमिक स्तर पर बच्चों में पढ़ने की आदत का विकास करने पर बहुत ज्यादा ध्यान नहीं दिया जाता है। इसका एक उदाहरण– लाइब्रेरी की उपेक्षा के रूप में नजर आता है या स्कूल में ढंग की किताब नहीं होती है, अगर किताबें होती भी है तो वह ताले में बंद रहती है।
- ijh{kkvk dk ncko% बोर्ड परीक्षाओं के डर की कहानी से आप सभी परिचित हैं, परीक्षाओं के दौरान किसी भी तरीके से पास होने वाली प्रवृत्ति नकल को बढ़ावा देती है। बोर्ड परीक्षाओं के दौरान बच्चों के ऊपर अच्छे प्रदर्शन का काफी दबाव होता है। यह दबाव शिक्षा के प्रति उनकी स्वाभाविक रूचि को परिस्कृत करने की बजाय उस में अरुचि पैदा करती है।
- iklikV ¼mÙkj dqthh½ ij fuHkjrk% माध्यमिक स्तर पर आते–आते बहुत से छात्रों को पासपोर्ट की आदत लग जाती है क्योंकि परीक्षाओं में रटकर सवालों के जवाब देने की क्षमता का ही परीक्षण होता है। ऐसे में पासपोर्ट के ऊपर बच्चों की निर्भरता बढ़ जाती है। इसके कारण उसमें कक्षा के अनुरूप पठन एवं लेखन कौशल का विकास नहीं हो पाता। वे किसी सवाल के बारे में सोच कर उसका जवाब तलाशने की प्रक्रिया से गुजरे बगैर सीधे जवाब तक पहुंचने की आदत के अभ्यस्त हो जाते हैं। पासपोर्ट उद्योग का करोड़ों का कारोबार इसका जीवंत उदाहरण है– वन वीक सीरीज जैसी चीजें भी माध्यमिक शिक्षा की गुणवत्ता को प्रभावित कर रही है।
- ç;kx'kkyk dh [kjkc fLFkfr% बहुत से विद्यालयों में साइंस या विज्ञान वर्ग की पढ़ाई तो शुरू हो गई है मगर वहां प्रयोगशाला का अभाव है। इसके कारण बच्चों को विज्ञान के व्यवहारिक पहलु की जानकारी नहीं हो पाती है। प्रैक्टिकल के अंक का दबाव बच्चों के ऊपर होता है। इस कारण से वे कालांश के दौरान खुलकर सवाल नहीं पूछ पाते। बहुत से स्कूलों में शिक्षकों के दबाव के कारण वे कोचिंग क्लासेस में भी पढ़ने को बाध्य होते हैं।
- dkspx lVj ij c<rh fuHkjrk% 10वीं एवं 12वीं के दौरान ही विद्यार्थियों को विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में बैठने की शुरुआत हो जाती है। इसका दबाव अभिभावकों के ऊपर होता है। वे चाहते है कि बच्चों को परीक्षा में अच्छे अंक आए ताकि अच्छे कॉलेज में दाखिला मिल सके। अच्छी तैयारी हो ताकि प्रवेश परीक्षा में अच्छा प्रदर्शन कर सके, इस कारण से भी कोचिंग सेंटर पर छात्रों की निर्भरता तेजी से बढ़ी है। इस समस्या से ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में मौजूद विद्यालय जूझ रहे हैं।
- vui;ä ikBîØe% माध्यमिक शिक्षा का पाठ्यक्रम किताबी ज्ञान को समझ से ज्यादा तवज्जो देता है। इसके कारण बच्चों का पढ़ाई के प्रति सही रुझान नहीं बन पाता है। ये विभिन्न विषयों को बगैर इस समझ के पढ़ रहे होते हैं कि वे इसका इसका इस्तेमाल कहां करेंगे। ऐसे में पाठ्यक्रमों को ज्यादा व्यवहारिक बनाने की जरूरत भी है।

- **nk"ki.k ijh{kk ç.kkyh%** 2 साल की पढ़ाई का मूल्यांकन एक ही साल में हो जाता था। मगर बाद में 10वीं एवं 12वीं के पाठ्यक्रम को अलग अलग किया गया ताकि बच्चों पर पढ़ाई का बोझ कम किया जा सके। साल भर में एक बार होने वाली परीक्षा से मूल्यांकन का सिलसिला ज्यों का त्यों जारी है। इसमें कोई खास बदलाव नहीं हुआ है। इसमें का लेखन कौशल वाली अभिव्यक्ति का मूल्यांकन तो हो रहा है, मगर अन्य कौशलों का मूल्यांकन नहीं हो पा रहा है।
- **d,yt dh r;kjh d fy, fdruh mi;kxh\%** माध्यमिक शिक्षा, विश्वविद्यालय में दाखिला की एंट्री पॉइंट है। यहीं से छात्रों को कॉलेज में जाने की शुरुआत होती है जहां वे ज्यादा विस्तृत दुनिया के साथ आपसी संवाद और सीखने–सिखाने की मौका हासिल करते हैं। माध्यमिक शिक्षा को कॉलेज की तैयारी की दृष्टि से ज्यादा उपयोगी बनाने की जरूरत है ताकि बच्चों में विश्लेषण की क्षमता का विकास हो सके और वे किसी सवाल को अपने परिवेश से जोड़कर उसका जवाब दे सके।

xeyk ftys e fo|ky;h; f'k{kk dh çeq[k leL;k,

- **iyk;u dh leL;k%** अभिभावकों के सामने जीविकोपार्जन की समस्या रहती है। वे रोजगार की खोज में दूसरे राज्यों में या ईट भट्टे पर चले जाते हैं तथा साथ में पूरे परिवार के लोग भी जाते हैं क्योंकि बच्चों की देखभाल करने वाला कोई नहीं होता है। इस कारण बच्चे विद्यालय छोड़ देते हैं, जिसके कारण उनकी पढ़ाई बाधित हो जाती है।
- **fo|ky;h ifjos'k e cnyko dh vko';drk%** प्राथमिक, मध्य एवं उच्च विद्यालयीय शिक्षा लगातार एक ही विद्यालय प्रांगण में होने के कारण बच्चों के विद्यालय वातावरण में ना कोई बदलाव हो पाता है ना कोई नयापन रहता है, जिसके कारण बच्चे विद्यालय परिवेश से ऊपर ऊब जाते हैं और विद्यालय छोड़ देते हैं।
- **f'k{kdk dk xj 'k{kf.kd dk;k e 0;Lr j[kuk%** शिक्षकों को वर्ष भर गैर शैक्षिक कार्यों में व्यस्त रखा जाता है – जैसे जनगणना, भिन्न–भिन्न प्रकार की रिपोर्ट भेजना, चुनाव ड्यूटी, परीक्षा फार्म भरना तथा जमा करना, चावल वितरण, पोशाक वितरण इत्यादि इन सभी कार्यों की वजह से शिक्षक अपने विषय का पाठ्यक्रम समय पर पूर्ण नहीं कर पाते हैं जिसके कारण विद्यालयों का प्रदर्शन अपेक्षाकृत अच्छा नहीं हो पाता है।
- **eè;kà Hkkstu l f'k{kdk dk iwjh rjg vyx djuk%** मध्याह् भोजन से शिक्षकों को पूरी तरह प्रत्यक्ष या परोक्ष दोनों रूपों से पूरी तरह अलग किया जाना चाहिए जिससे वे तनाव मुक्त होकर पूरी तन्मयता से अपनी शिक्षक की जिम्मेदारियों का निर्वहन कर सके।
- **fo|kfFk;k dk oxZ 3 l mld okLrfod lKkukRed Lrj l çkUur fd;k tk,%** विद्यार्थियों को संज्ञानात्मक स्तर पर कोई समझ नहीं रहने पर भी प्रोन्नत कर दिया जाता है क्योंकि नियमतः किसी विद्यार्थी को अनुतीर्ण नहीं किया जा सकता, जिसके कारण विद्यार्थियों में भय नहीं रहने से सीखने और पढ़ने की उनकी रूचि में कमी देखी जा रही है। अतः विद्यार्थियों को उनकी समझ के अनुसार प्रोन्नति दी जानी चाहिए।
- **mifLFkfr d vk/kkj ij çkUufr%** विद्यार्थियों को विद्यालय में उनकी उपस्थिति के आधार पर ही स्तरोन्नत किया जाए क्योंकि जो बच्चे विद्यालयों में नियमित उपस्थित होकर रहेंगे, वही परीक्षाओं में बेहतर प्रदर्शन कर पाएंगे।
- **Nk=of̀Ùk U;ure vad vk/kkfjr gk%** किसी भी वर्ग के विद्यार्थी को छात्रवृत्ति प्राप्त करने के लिए न्यूनतम 50 प्रतिशत अंक की बाध्यता रखी जाए जिससे कि छात्रों की पढ़ाई के प्रति रुचि में वृद्धि हो।
- **cky fookg%** विशेष रूप से बाल विवाह गुमला जिले सहित पूरे झारखंड में एक बड़ी समस्या है। इसका एक प्रमुख कारण एक अन्य सामाजिक समस्या दहेज है, दूसरा प्रमुख कारण धार्मिक अनुष्ठान यथा कम उम्र में कन्यादान से जुड़ा हुआ है। इससे स्पष्ट है कि एक समस्या कई अन्य समस्याओं को जन्म देती है। दहेज प्रथा के कारण ही बाल विवाह होता है। नौकरी पेशा वर होने पर दहेज की मांग की जाती है। दहेज प्रथा के कारण ही बेमेल विवाह भी होते हैं या था। बाल विवाह के कारण एक अन्य समस्या कच्ची उम्र में मां बनना

तथा उच्च शिशु मृत्यु दर में भी वृद्धि होती है। इसके अलावा सामाजिक दबाव के कारण माता–पिता बालिका की कम उम्र में शादी करके जिम्मेदारी के बोझ से मुक्त होना चाहते हैं।

- **ekuo rLdjh%** माता–पिता की आय का स्रोत ना होना भी मानव तस्करी का बहुत बड़ा कारण है। माता–पिता ज्यादा बच्चे होने के कारण उन का भरण–पोषण उचित ढंग से करने में सक्षम नहीं होते हैं, इस कारण भी उसकी अच्छी परवरिश के लिए उनको किसी निसंतान दंपत्ति को बेच देते हैं या किसी अन्य व्यक्ति के यहां भेज देते हैं जो उन्हें बाल कि के रूप में रखकर उनका शारीरिक शोषण करते हैं। मानव तस्करी का मुख्य कारण गरीबी एवं बेरोजगारी है।
- **vèkfoÜokl dh leL;k%** पूरे झारखंड में और विशेषकर गुमला जिले में अंधविश्वास के कारण निर्दोष लोगों की जाने जाती हैं। यहां साधारण या गंभीर बीमारी होने पर भी अशिक्षा एवं जागरूकता के अभाव के कारण लोग योग्य चिकित्सक के यहां न जाकर बल्कि नीम–हकीम और ओझा–गुनी के यहां जाते हैं और वे लोग भूत–प्रेत और डायन–बिसाही का असर बता देते हैं। इस कारण निर्दोष लोगों को डायन बताकर उसकी हत्या कर दी जाती है, उदाहरण के लिए सिसई प्रखंड के नगर सिसकारी गांव में 4 लोगों की हत्या 2019 में कर दी गई थी तथा 2021 में रायडीह प्रखंड के अंबा गांव में भी 3 लोगों की हत्या भी डायन के संदेह में की गई थी।
- **ekufld LokLF; dk çfr tkx:drk dk vHkko%** प्रायः किसी समस्या के समाधान ना होने पर व्यक्ति जब अत्यधिक तनाव में होता है तो उसे मानसिक स्वास्थ्य की समस्या आ जाती है। हमारे देश में मानसिक स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता की कमी है तथा झारखंड में और भी गंभीर स्थिति है। यहां पर लगभग 4 प्रतिशत जनसंख्या मानसिक स्वास्थ्य की समस्या से गुजर रही है लेकिन जागरूकता नहीं होने के कारण लोग सही समय पर मानसिक चिकित्सक के यहां नहीं जा पाते हैं और गंभीर मानसिक रोगों का शिकार होकर हिंसक प्रवृत्ति के हो जाते हैं। ऐसे में भी ओझा गुनी के पास जाकर गुमराह हो जाते हैं। कभी–कभी विद्यालय के बच्चे भी अवसाद का शिकार हो जाते हैं।
- **Hkk"kk dh leL;k%** विद्यालयी शिक्षा में भाषा भी एक प्रमुख समस्या है। बच्चे अपने घर में तथा आसपास अपनी क्षेत्रीय भाषा में बोलते हैं लेकिन जब वे विद्यालयी परिवेश में आते हैं तो शिक्षकों के साथ हिंदी भाषा में बात करना होता है, जिसके कारण विद्यार्थियों को शिक्षकों के साथ संवाद स्थापित करने में कठिनाई का सामना करना पड़ता है।
- **fMftVy f'k{kk dh leL;k,%** विद्यालयी शिक्षा में डिजिटल शिक्षा भी एक बड़ी समस्या है। लगभग 3 प्रतिशत बच्चे ही डिजिटल शिक्षा ग्रहण कर पाते हैं, जिसका प्रमुख कारण है मोबाइल का अभाव। घर में एक ही मोबाइल होता है जिसे लेकर अभिभावक काम पर चले जाते हैं तथा रात को आते हैं और रात को बिजली के अभाव तथा सो जाने के कारण बचे स्मार्ट फ़ोन से वीडियो आधारित शिक्षा ग्रहण करने से वंचित रह जाते हैं।

fo|ky;h f'k{kk dh leL;kvksa ds lekèkku gsrq egRoiw.kZ lq>ko

- **[ksydwn dks c<kok nsuk%** विद्यालय प्रांगण में खेलकूद को बढ़ावा दिया जाना चाहिए ,जिससे कि बच्चे अपनी समस्त ऊर्जा को खेलकूद में लगाकर अपना मनोरंजन करते हुए अपनी शारीरिक क्षमता को मजबूत कर सके तथा जब कक्षा में बैठे हो तो पूरे मन से एकाग्र चित्त होकर पढ़ाई पर ध्यान दें। कहा भी गया है कि "स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क रहता है"।
- **ikB~; lgxkeh fØ;kvksa dks c<kok nsuk%** पढ़ाई के अलावा विद्यालयों में पाठ्य सहगामी क्रियाओं के अंतर्गत ड्राइंग, पेंटिंग, कैलीग्राफी, नृत्य, वाद–विवाद प्रतियोगिता तथा क्विज का आयोजन भी समय–समय पर किया जाना चाहिए।

- **dk'ky vkèkkfjr f'k{kk dk c<kok nuk%** विद्यालयों में उच्च प्राथमिक स्तर पर बच्चों के कौशल और अभिरुचि के अनुरूप उनकी शिक्षा की व्यवस्था की जानी चाहिए क्योंकि हर बच्चा अपने आप में विशेष होता है। यह संभव है कि कोई छात्र पढ़ने में बहुत अच्छा ना हो पर उसमें एक अच्छे कारीगर, मैकेनिक तथा पेंटर बनने की क्षमता हो तो उसी दिशा में उसको कैरियर चुनने के लिए शिक्षण तथा मार्गदर्शन मिलना चाहिए।
- **fo|ky; e l|foèkk ;|ä l:lkèkuk dk c<kok nuk%** विद्यालयों में यह प्रायः देखा गया है कि वहां बुनियादी सुविधाओं का भी अभाव होता है। बच्चों को पढ़ने के लिए या तो भवन का अभाव होता है या तो वे बहुत ही जर्जर हालत में है जिससे हमेशा दुर्घटना की आशंका बनी रहती है। इसके अलावा शौचालय, श्यामपट्ट, डस्टर जैसे दैनिक उपयोग की सामग्री का भी अभाव होता है। विद्यालयों में खेल का मैदान तो है पर वहां पर चहारदीवारी का अभाव है जिससे वहां पर मवेशियों का आना–जाना लगा रहता है, परिणाम स्वरूप किचन गार्डन भी नहीं बन पाता है तथा अनाधिकृत प्रवेश होता रहता है।
- **fo|ky;k e f'k{kdk dh deh dk }j fd;k tk,%** प्रायः विद्यालयों में यह देखा गया है कि शिक्षकों की संख्या दो या तीन है, तो कहीं पर विषय वार शिक्षक एक है ,कहीं तो एक भी नहीं है, जिससे कक्षाओं का संचालन सुचारु रुप से नहीं हो पाता है। इस तरह से छात्र शिक्षक अनुपात भी नियमानुसार नहीं है।
- **0;kolkf;d f'k{kk dk çkR lkfgr fd;k tk,%** विद्यालयों में कला, विज्ञान और वाणिज्य के अलावा एक व्यावसायिक संकाय का भी संचालन प्रारंभ किया जाना चाहिए। जिससे जिन बच्चों की रुचि आगे चलकर व्यवसाय से जुड़ने में है उन्हें व्यवसाय से संबंधित पढ़ाई करने का अवसर मिल सके तथा सही दिशा में मार्गदर्शन मिल सके व समय की बर्बादी से बचा जा सके। कहा भी गया है – "समय किसी की प्रतीक्षा नहीं करता"।
- **d{kk e vfèkd l[;k dk de fd;k tk,%** यह विद्यालय में देखा गया है कि कक्षा में सीट के अनुपात में नामांकन ज्यादा हो जाता है, जिससे एक ही बेंच पर चार के स्थान पर पांच या छह बच्चे बैठ जाते हैं, जिसके कारण वे विद्या अध्ययन में बाधा महसूस करते हैं तथा सही ढंग से लिख पढ़ भी नहीं पाते हैं। अतः नामांकन करते समय कक्षाओं में छात्र संख्या का भी ध्यान रखा जाना चाहिए।
- **fo|ky; ikBîØe dk okLrfod thou dh ?kVukvk l tkMk tk,%** यह देखा गया है कि विद्यालयी शिक्षा के पाठ्यक्रम में कुछ अध्याय ऐसे होते हैं जिसका व्यवहारिक जीवन में कोई उपयोग नहीं होता है फिर भी पढ़ना पड़ता है। पाठ्यक्रम है ऐसा होना चाहिए जिससे घटनाओं एवं कहानियों के द्वारा अवधारणा को स्पष्ट किया जाए तथा यह घटनाएं एवं कहानियां वास्तविक जीवन से संबंधित हो तथा विद्यार्थियों को व्यवहारिक जीवन की बातों का उदाहरण देकर और अवधारणा को स्पष्ट किया जाए। जैसे अनुच्छेद 21 जीवन जीने की स्वतंत्रता से संबंधित है इसमें विद्यार्थी को वास्तविक जीवन से इसको जोड़ते हुए समझाना चाहिए कि यह किस प्रकार से जीवन जीने की स्वतंत्रता देता है। इसको विस्तार से उदाहरण सहित बताया जाए कि पानी से जीवन है, इसलिए कोई भी व्यक्ति किसी को पानी देने से मना नहीं कर सकता है। इस प्रकार से अवधारणा को स्पष्ट किया जा सकता है।
- **ikBîØe e eY; f'k{kk dk tkMk tk,%** आज के परिवेश में यह अति आवश्यक है कि पाठ्यक्रम में मूल्य शिक्षा अथवा सदाचार को शामिल किया जाए। प्रायः विद्यार्थियों में अनुशासनहीनता प्रदर्शित होती है और मूल्यों का हास होता दिखता है। इस कारण मूल्य शिक्षा को बढ़ावा देना भी प्रासंगिक है।

fu"d"k

उपरोक्त विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि जिस प्रकार किसी बहुमंजिले भवन के निर्माण में मजबूत नींव का होना अत्यन्त आवश्यक है अन्यथा वह भवन शीघ्र ही कमजोर होकर ध्वस्त हो सकता है, ठीक उसी प्रकार विद्यालयी शिक्षा और उच्च शिक्षा के बीच की सबसे महत्वपूर्ण कई प्राथमिक शिक्षा है। प्राथमिक शिक्षा ही उच्च शिक्षा रूपी भवन की नींव है जिसका मजबूत व गुणवतापूर्ण होना नितान्त आवश्यक है नहीं वो इसके अभाव में उच्च शिक्षा

दिखावा मात्र रह जयेगी, जो सिर्फ डिग्री दे सकती है लेकिन रोजगार नहीं। ऐसी उच्च शिक्षा की डिग्री में गुणवत्ता का अभाव महसूस होगा जो कि अवसाद व बेरोजगारी को जन्म देगी।

lanHkh lph

1. माध्यमिक शिक्षा की समस्यायें स्वयं विचार–विमर्श के बाद विद्यालयी शिक्षा के सभी के व्यक्तिगत अनुभव का समायोजन।
2. https://e-gyan-vigyan.com/uchchshiksha-mein-mukhy-samasyaayen/
3. https://www.etvbharat.com/hindi/jharkhand/state/ranchi/shortage-of-teachers-in-universities-of-jharkhand-in-ranchi/jh20210109054936758

****